International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-09-2026, Accepted: 16-10-2026, Published: 31-10-2026
Volume 12, Issue 4, 2026, Page No. 65-67

त्रिलोचन के साहित्य में ग्रामीण श्रमसंस्कृति और बदलते आर्थिक सरोकार

श्रद्धा सिंह[1], डॉ. शिवांगी सिंह[2]
[1] शोधार्थी, डॉ. के. एन. मोदी यूनिवर्सिटी, नेवाई, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशिका, डॉ. के. एन. मोदी यूनिवर्सिटी, नेवाई, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.4.12260

सारांश
त्रिलोचन के साहित्य में गाँव का महत्त्व केवल भौगोलिक परिवेश के रूप में नहीं है। वह श्रम, जीविका, सामाजिक प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक अधिकार के परस्पर संबंधों को समझने का आधार है। प्रस्तुत शोधपत्र उनकी चुनी हुई कविताओं का पाठकेंद्रित अध्ययन करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि ग्रामीण श्रमसंस्कृति में मानवीय सहयोग और अनुभवजन्य ज्ञान के साथ जातिगत असमानता तथा सामाजिक अनुशासन भी सक्रिय रहते हैं। आर्थिक परिवर्तन का प्रश्न इसलिए केवल आय या व्यवसाय बदलने तक सीमित नहीं रहता; वह परिवार के साथ रहने, शिक्षा प्राप्त करने, अपनी भाषा में बोलने और सम्मानपूर्वक जीवन बिताने की संभावनाओं से जुड़ता है। अध्ययन में 'नगई महरा', 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' तथा 'उस जनपद का कवि हूँ' को केंद्रीय पाठ बनाया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि त्रिलोचन की काव्यदृष्टि श्रमशील मनुष्य के पक्ष में रहते हुए ग्रामीण परंपरा का आलोचनात्मक परीक्षण करती है। उनकी प्रासंगिकता आर्थिक विकास के मानवीय परिणामों की जाँच में निहित है

मूल शब्दः त्रिलोचन, ग्रामीण जीवन, श्रमसंस्कृति, आर्थिक सरोकार, प्रवासन, स्त्री श्रम, जाति, जनभाषा।

हिंदी कविता में गाँव की उपस्थिति अनेक रूपों में मिलती है। कहीं वह प्रकृति और स्मृति का आश्रय है, कहीं सामाजिक संघर्ष का क्षेत्र। त्रिलोचन को पढ़ते समय गाँव को एक सरल, आत्मनिर्भर और अंतर्विरोधरहित इकाई मानना कठिन हो जाता है। उनकी कविता के मनुष्य काम करते हैं, संबंध निभाते हैं, अभाव सहते हैं और सामाजिक स्वीकृति की तलाश करते हैं। इस संसार में संस्कृति दैनिक व्यवहार से बनती है; उसका संबंध भोजन, पानी, कामकाज, बोली और सामुदायिक जीवन से है।

इस शोधपत्र का केंद्रीय तर्क है कि ग्रामीण श्रमसंस्कृति और आर्थिक सरोकारों को अलग–अलग पढ़ने से त्रिलोचन की सामाजिक दृष्टि का महत्त्वपूर्ण हिस्सा छूट जाता है। श्रम व्यक्ति को जीवननिर्वाह का साधन देता है, लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा स्वतः सुनिश्चित नहीं करता। दूसरी ओर रोजगार का अवसर व्यक्ति को आय दे सकता है, पर उसके परिवार और परिचित परिवेश से दूरी भी उत्पन्न कर सकता है। इस तनाव में ही आर्थिक परिवर्तन का मानवीय अर्थ खुलता है।

शीर्षक में 'साहित्य' का प्रयोग व्यापक है, किंतु प्रस्तुत विवेचन चुनी हुई कविताओं तक सीमित है। निष्कर्षों को त्रिलोचन की सभी विधाओं का अंतिम मूल्यांकन नहीं माना गया है। यहाँ कविता के पात्रों और स्थितियों के आधार पर श्रम, सामाजिक संबंध और बदलती आर्थिक प्राथमिकताओं की व्याख्या की गई है।

अध्ययन का उद्देश्य और पद्धति

अध्ययन के तीन परस्पर संबद्ध उद्देश्य हैं। पहला, श्रमसंस्कृति को केवल मेहनत के गौरवगान से आगे बढ़ाकर सामाजिक संबंधों के रूप में समझना। दूसरा, जाति और लिंग के कारण श्रम के मूल्यांकन में उत्पन्न विषमता पहचानना। तीसरा, पलायन और शिक्षा जैसे प्रश्नों में आर्थिक परिवर्तन के मानवीय परिणामों की पड़ताल करना।

पद्धति गुणात्मक, पाठकेंद्रित और व्याख्यात्मक है। तीन कविताओं के उपलब्ध डिजिटल पाठ प्राथमिक सामग्री हैं। प्रत्यक्ष उद्धरण संक्षिप्त रखे गए हैं और संदर्भ संख्या उनके साथ दी गई है। विवेचन में पाठगत तथ्य और इस अध्ययन की व्याख्या को अलग रखने का प्रयास किया गया है। यह आर्थिक सर्वेक्षण नहीं है; इसमें मजदूरी, उत्पादन, भूमि वितरण अथवा प्रवासन की दरों के बारे में कोई सांख्यिकीय दावा नहीं किया गया है।

'बदलते आर्थिक सरोकार' का अर्थ यहाँ साहित्य में दिखाई देने वाले जीविका और सामाजिक अपेक्षाओं के तनाव से है। किसी कविता को वर्तमान आर्थिक नीति का प्रत्यक्ष दस्तावेज मान लेना इस अध्ययन की पद्धति के अनुकूल नहीं है। समकालीन संबंध केवल तुलनात्मक प्रश्न के रूप में उठाए गए हैं।

श्रमसंस्कृति की अवधारणा

श्रमसंस्कृति में काम करने की तकनीक के साथ वे मूल्य और संबंध भी आते हैं जिनके माध्यम से समाज काम को पहचानता है। किस कार्य को प्रतिष्ठा मिलती है, किसे साधारण या निम्न समझा जाता है, किसका योगदान दिखाई देता है और किसका योगदान परिवार के सामान्य दायित्व में विलीन हो जाता है—ये सभी उसके प्रश्न हैं। इस दृष्टि से संस्कृति उत्पादन के बाहर स्थित कोई स्वतंत्र सजावट नहीं है।

श्रमशील व्यक्ति की गरिमा स्वीकार करना और उसके वर्तमान जीवन को संतोषजनक मान लेना दो अलग बातें हैं। अभाव में धैर्य रखने वाला व्यक्ति सम्मान का अधिकारी है, पर उसका धैर्य अभाव को न्यायसंगत नहीं बना देता। इसी प्रकार ग्रामीण सहयोग महत्त्वपूर्ण है, लेकिन सहयोग के भीतर असमान अधिकार भी हो सकते हैं। यह भेद त्रिलोचन की कविताओं को भावुक ग्रामीण प्रशंसा से बचाकर पढ़ने में सहायता देता है।

नगई महरा में जीविका और सामाजिक अधिकार

'नगई महरा' में भाड़ चलाना, पानी भरना और रस्सी बनाना जैसे काम एक परिवार की जीविका से जुड़े हैं। पानी की सेवा के बदले खेत और भोजन मिलने का प्रसंग श्रम तथा प्रतिफल के ऐसे संबंध दिखाता है जो केवल नकद मजदूरी से नहीं समझे जा सकते। पंचायत का दंड और भोज सामाजिक स्वीकृति के आर्थिक पक्ष को भी सामने लाते हैं। [1]

इन प्रसंगों से यह व्याख्या संभव होती है कि मेहनत की उपयोगिता और मेहनतकश की सामाजिक स्थिति के बीच दूरी बनी रह सकती है। किसी व्यक्ति की सेवाएँ स्वीकार कर लेना

उसके निर्णयों की स्वतंत्रता स्वीकार कर लेना नहीं है। संस्कृति के भीतर यह विरोध तभी दिखाई देता है जब हम श्रम को केवल कार्यों की सूची की तरह न पढ़ें। प्रश्न यह भी होना चाहिए कि काम करने वाले व्यक्ति को अपना जीवन निर्धारित करने का कितना अधिकार है।

आर्थिक सरोकार यहाँ बाजार की उपस्थिति तक सीमित नहीं हैं। प्रतिष्ठा बनाए रखने और सामुदायिक मान्यता प्राप्त करने में भी संसाधन लगते हैं। इससे साहित्य के अध्ययन के लिए एक उपयोगी निष्कर्ष निकलता है: आर्थिक संबंधों को समझते समय सामाजिक अनुष्ठानों और स्वीकृति की प्रक्रियाओं को भी देखना चाहिए। इन्हें केवल सांस्कृतिक आयोजन कह देने से उनका भौतिक भार अदृश्य हो सकता है।

स्त्री श्रम की पहचान

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर विचार करते समय केवल उस काम की गणना पर्याप्त नहीं है जिसके बदले स्पष्ट भुगतान मिलता है। घर संभालना, भोजन बनाना, देखभाल करना और काम करने वाले सदस्यों के जीवन को संभव बनाना भी श्रम की व्यापक संरचना का हिस्सा है। इस अध्ययन में यह अवधारणात्मक आधार स्त्री की भूमिका को समझने के लिए अपनाया गया है; इसे कविता से प्राप्त मात्रात्मक निष्कर्ष नहीं माना गया है।

'नगई महरा' में महरिन की सक्रियता और सामाजिक अपमान का प्रसंग ध्यान खींचते हैं। [1], यहाँ स्त्री को केवल परिवार की पृष्ठभूमि में रखकर पढ़ना अपर्याप्त होगा। उसके काम, उत्तर देने की क्षमता और आत्मसम्मान को साथ पढ़ने पर लिंग तथा जाति के संबंध अधिक स्पष्ट होते हैं। आर्थिक योगदान के बावजूद व्यक्ति की आवाज दब सकती है; इसलिए योगदान और अधिकार के बीच संबंध की जाँच आवश्यक है।

स्त्री श्रम को पहचानने का आशय उसकी सहनशीलता को अनंत मान लेना नहीं है। आलोचनात्मक अध्ययन को यह भी पूछना चाहिए कि काम का बँटवारा किस आधार पर होता है और निर्णय का अधिकार किसके पास रहता है। इस प्रश्न से ग्रामीण संस्कृति की मानवीय उपलब्धियाँ और सीमाएँ दोनों सामने आती हैं।

चंपा में शिक्षा और प्रवासन का तनाव

'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' में चरवाही करने वाली लड़की को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। संवाद में भावी पति के कलकत्ता जाने और पत्र पढ़ने का प्रसंग आता है। चंपा अपने साथी के दूर जाने को स्वीकार नहीं करना चाहती। उसकी तीखी प्रतिक्रिया है—"कलकत्ता पर बजर गिरे।" [2],

इस प्रतिक्रिया की व्याख्या केवल शिक्षा–विरोध के रूप में करना कविता के संवाद को संकुचित कर देता है। यहाँ इस अध्ययन का तर्क है कि चंपा उस जीवन–व्यवस्था पर भी प्रश्न लगाती है जिसमें रोज़गार के लिए आत्मीय संबंधों से दूर होना सामान्य अपेक्षा बन जाता है। यह व्याख्या उसके कथन की भावात्मक दिशा से निकलती है; कविता प्रवासन का कोई आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत नहीं करती।

शिक्षा के पक्ष में दिया गया तर्क व्यावहारिक है, पर चंपा की इच्छा उस व्यावहारिकता की कीमत सामने रखती है। आर्थिक अवसर का मूल्यांकन करते समय आय के साथ संबंध, सुरक्षा और साथ रहने की इच्छा भी विचारणीय हैं। इससे शिक्षा का महत्त्व घटता नहीं; शिक्षा की ऐसी कल्पना की आवश्यकता स्पष्ट होती है जो मनुष्य के अनुभव को सुन सके।

जनपद की दरिद्रता और प्रतिनिधित्व का प्रश्न

'उस जनपद का कवि हूँ' में कवि की पहचान उस समाज से जुड़ती है जिसकी वंचना उसके सार्वजनिक परिचय का हिस्सा है। आरंभिक कथन—"उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा दूखा है"—इस संबंध को स्पष्ट करता है। कविता सांस्कृतिक दूरी और पुरानी मान्यताओं के बोझ की ओर भी संकेत करती है। [3],

यहाँ पक्षधरता को केवल सहानुभूति मानना पर्याप्त नहीं होगा। वंचित समुदाय के अनुभव को साहित्यिक विचार का विषय बनाना प्रतिनिधित्व का प्रश्न उठाता है: कौन बोलता है, किसके लिए बोलता है और किसकी भाषा को ज्ञान का स्थान मिलता है? आर्थिक अभाव मनुष्य की सांस्कृतिक भागीदारी को प्रभावित कर सकता है, पर उससे उसकी संवेदना अथवा विचार करने की क्षमता का अभाव सिद्ध नहीं होता।

इस कविता को पढ़ते हुए आलोचक को भी अपनी स्थिति पर विचार करना पड़ता है। ग्रामीण मनुष्य को केवल करुणा का पात्र मान लेना उसकी सक्रियता को सीमित कर सकता है। उसके अनुभव को आलोचनात्मक समझ का आधार बनाना अधिक कठिन और अधिक आवश्यक कार्य है। त्रिलोचन की काव्यदृष्टि पर विचार का यह एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है।

जनभाषा और श्रम के अनुभव की अभिव्यक्ति

कामकाजी जीवन की भाषा केवल सूचना नहीं देती; उसमें सामाजिक संबोधन, कार्यकौशल और संबंधों की स्मृति रहती है। मानक भाषा में किसी स्थानीय शब्द का अर्थ बताना संभव है, किंतु उसके व्यवहारगत अर्थ को पूरी तरह स्थानांतरित करना हमेशा आसान नहीं होता। इसलिए लोकभाषा की उपस्थिति को केवल स्थानीय रंग कह देना उसके ज्ञानात्मक पक्ष की उपेक्षा होगी।

इस अध्ययन में जनभाषा को आर्थिक अधिकार का सीधा विकल्प नहीं माना गया है। अपनी बोली में बोलने की साहित्यिक जगह मिलने से वास्तविक जीवन की असमानता स्वतः समाप्त नहीं होती। फिर भी अनुभव को व्यक्त करने का अधिकार सामाजिक मान्यता का आवश्यक पक्ष है। जिस काम का नाम और वर्णन साहित्य में स्थान पाता है, उसकी उपस्थिति पाठक की चेतना में अधिक स्पष्ट हो सकती है।

आर्थिक परिवर्तन को पढ़ने की सीमाएँ

चुनी हुई कविताएँ एक क्रमबद्ध आर्थिक इतिहास प्रस्तुत नहीं करतीं। इनके आधार पर यह कहना उचित नहीं होगा कि त्रिलोचन ने किसी विशेष नीति, उदारीकरण के किसी चरण अथवा आज की किसी श्रमव्यवस्था पर व्यवस्थित टिप्पणी की है। ऐतिहासिक निष्कर्षों के लिए अलग अभिलेखीय और आर्थिक सामग्री आवश्यक होगी।

फिर भी साहित्य आर्थिक विचार को उपयोगी प्रश्न देता है। विकास से किसकी स्वतंत्रता बढ़ती है? रोजगार पाने की सामाजिक और पारिवारिक कीमत कौन चुकाता है? परंपरा किसे सहारा देती है और किसे नियंत्रित करती है? इन प्रश्नों में साहित्य की उपयोगिता आँकड़ों का स्थान लेना नहीं, अनुभव के उन आयामों को सामने लाना है जो संख्यात्मक विवरण में पीछे रह जाते हैं।

इसी कारण गाँव और शहर को नैतिक रूप से दो स्थिर विरोधी ध्रुव मानना भी उचित नहीं है। गाँव में आत्मीयता के साथ दबाव हो सकता है; शहर अवसर के साथ अलगाव ला सकता है। परिवर्तन का मूल्यांकन स्थान के नाम से अधिक वहाँ उपलब्ध अधिकार और जीवन की संभावनाओं के आधार पर होना चाहिए।

निष्कर्ष

त्रिलोचन की चुनी हुई कविताओं का अध्ययन ग्रामीण श्रमसंस्कृति को जीविका, आत्मसम्मान और सामाजिक नियंत्रण के संयुक्त क्षेत्र के रूप में देखने की दिशा देता है। श्रम मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता का परिचायक है, किंतु उसका सामाजिक प्रतिफल बराबर

नहीं होता। जाति, लिंग और सामुदायिक स्वीकृति की व्यवस्थाएँ इस प्रतिफल को प्रभावित करती हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र का प्रमुख निष्कर्ष है कि आर्थिक सरोकारों का मानवीय मूल्यांकन आय और रोजगार से आगे जाना चाहिए। साथ रहने की इच्छा, बोलने का अधिकार, शिक्षा तक पहुँच और निर्णय की स्वतंत्रता भी उसमें शामिल हैं। त्रिलोचन की प्रासंगिकता ग्रामीण जीवन को स्थिर आदर्श घोषित करने में नहीं, उसके भीतर मनुष्य के अधिकारों को पहचानने में है। आगे का अध्ययन उनके अन्य काव्यसंग्रहों और गद्य को सम्मिलित करके इस निष्कर्ष की व्यापकता तथा सीमाओं की जाँच कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. त्रिलोचन। 'नगई महरा'।
2. त्रिलोचन। 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती'।
3. त्रिलोचन। 'जनपद का कवि' अर्थात 'उस जनपद का कवि हूँ'।